कलियुगके त्रिकालदर्शी ऋषि !

योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजी

(गुण-विशेषताएं, कार्य, सिद्धि एवं देहत्याग)

विषयसूची

- योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीके हिमालयवासी सद्गुरु प.पू. आनंदस्वामीजी ! ५
- एकमेवाद्वितीय योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीके चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणाम ! ७
- भक्तवत्सल और कृपासिंधु योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीके चरणोंमें कोटि-कोटि कृतज्ञता ! १०
- ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय १३

अनुक्रमणिका

१. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीका जन्म, उनकी साधनायात्रा और उनके द्वारा की गई कठोर साधना १५

२. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीकी सरल और सात्त्विक जीवनशैली २४

३. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीके विविध गुण २५

४. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीकी विविध विशेषताएं ३४

५. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीके परिजन और उनकी कुछ विशेषताएं तथा योगतज्ञ दादाजीके प्रति उनके द्वारा व्यक्त हृद्गत ! ४५

६. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीको प्राप्त कुछ प्रमुख सिद्धियां ४९

७. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीकी 'भविष्यकथन सिद्धि' और उनके द्वारा लिखी गई विशेषतापूर्ण भविष्यवाणियां ६६

८. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीका अद्वितीय कार्य ८७

९. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीका 'ॐ आनंदं हिमालयं' सम्प्रदाय और उसका प्रमुख दैवी मन्त्र (प्रार्थना) ! १०१

१०. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीकी असीम कृपाकी अनुभूति देनेवाली ‘अनुष्ठान’ पद्धति १०३

११. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीकी उपस्थितिमें मनाए गए महोत्सव ११४

१२. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीको मिले विविध पुरस्कार ११५

१३. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजी एवं परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीकी आत्मीयता ! ११६

१४. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीकी सनातनपर प्रीति एवं कृपादृष्टि ! १२९

१५. योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीका देहत्याग ! १३८

卐 **संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी** १५९

डॉ. जयंत आठवलेजीकी ‘सच्चिदानंद परब्रह्म’ उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

‘१३.७.२०२२ से ‘सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका’के वाचनके माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको ‘सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले’ सम्बोधित किया जा रहा है। सप्तर्षियोंकी इस आज्ञाका उद्देश्य है कि ‘सच्चिदानंद परब्रह्म’ उपाधिके सम्बोधनसे ‘परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीमें विद्यमान ईश्वरीय तत्त्वका सभीको लाभ हो।’ (१३.७.२०२२ से पहले सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीको सनातनके ग्रन्थोंमें ‘प.पू. [परम पूज्य]’ एवं ‘परात्पर गुरु’ की उपाधियोंसे सम्बोधित किया है।) इन उपाधियोंके अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थके मुखपृष्ठपर एवं ग्रन्थमें आवश्यक स्थानोंपर वैसा उल्लेख किया है।’ **– (पू.) श्री. संदीप आळशी, सनातनके ग्रन्थोंके संकलनकर्ता (२४.७.२०२२)**

विषयसूची अन्तर्गत क्रमांक १

योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीके हिमालयवासी सद्गुरु प.पू. आनंदस्वामीजी !

१. हिमालयकी गहन गुफामें ध्यानमग्न स्थितिमें ईश्वरीय कार्य करनेवाले सद्गुरु प.पू. आनंदस्वामीजी ! : 'मेरे सद्गुरु प.पू. आनंदस्वामीजी अत्यन्त तेजःपुंज ब्रह्मचारी, कश्मीरी ब्राह्मण हैं । वे उच्चविद्याविभूषित हैं । दर्शन करनेवाले लोगोंको वे वृद्ध होते दिखाई नहीं देते । हिमालयकी कुल्लू घाटीके अदृश्य परिसरमें स्थित विभिन्न गुफाओंमें विविध सम्प्रदायोंके ऋषि-मुनि निवास कर रहे हैं । ऐसे दुर्गम परिसरकी गहन गुफामें ध्यानमग्न स्थितिमें सद्गुरु प.पू. आनंदस्वामीजी निवास करते हैं । वे ईश्वरीय कार्य भी करते हैं ।' - योगतज्ञ दादाजी वैशंपायनजी, कल्याण, जनपद ठाणे.

२. सद्गुरु प.पू. आनंदस्वामीजीके साधकोंको हुए तेजरूपमें दिव्य दर्शन ! : 'सद्गुरु प.पू. आनंदस्वामीजी १५ वर्षोंकी समाधि अवस्थासे प्रकट होते समय प्रतिविष्णुस्वरूप हुए तथा सूर्यके समान प्रखर तेजःपुंज हो गए । साधकोंको उनके दर्शन होनेकी सम्भावना ही नहीं थी; इसलिए उनके तेजके दर्शन करनेकी इच्छा कुछ प्रगतिशील वरिष्ठ साधकोंने व्यक्त की । साधकोंका कहना था कि 'सूर्योदय होनेपर चराचर सृष्टि प्रकाशमान हो जाती है । तब इन विष्णुस्वरूप सद्गुरुका प्रकाशदर्शन एक उदाहरणके रूपमें हो, ऐसी मन ही मन लगन है । हमें स्वीकार है कि हमारी योग्यता नहीं है; परन्तु ऐसी शुभ घटना होगी, तो साधनामें अधिक उत्साह अनुभव होगा, ऐसा साधक उत्कण्ठासे कहते रहे । तत्पश्चात एक शुभदिन घरके तीसरे तलपर (कल्याण स्थित योगतज्ञ दादाजीकी वास्तुमें) उचित स्थानका चयन कर श्रद्धावान उपासक, समझदार और विश्लेषक साधक आदि अनेक लोगोंको 'हॉल'में एकत्रित बिठाया गया । उनसे साढे चार घण्टे शुद्धतासे मन्त्रघोष करवाया गया । 'सिद्धि'का प्रत्यक्ष प्रदर्शन दिव्यशक्ति ही दिखाएगी; इसलिए घर और मार्ग की सर्व बत्तियां बुझ गईं । चारों ओर घनघोर अन्धेरा छा

गया । साधारणतः १० मिनट पश्चात बिजलीके समान; परन्तु सप्तरंगी नेत्रदीपक और पूर्णिमाके चन्द्रमाके आकारकी प्रकाशकी किरणें खिडकीसे भीतर आईं और वह सम्पूर्ण स्थान ही पूर्ण प्रकाशमय हो गया । यह देदीप्यमान प्रकाश सहजतासे आंखोंसे देखना असम्भव था, इस कारण सबने आंखें झपकाकर दर्शन किए । तत्पश्चात वह तेज अन्तर्धान हो गया तथा तुरन्त ही घर और मार्गकी बत्तियां अपनेआप जल गईं । कुछ पाठकोंको यह घटना काल्पनिक लगेगी; परन्तु इस घटनाको प्रत्यक्ष अनुभव करनेवाले लोग अभी भी उस स्मृतिसे आनन्दित होते हैं । ऐसे स्वरूपका दिव्य दर्शन सद्गुरु प.पू. आनंदस्वामीजीने उचित दिन, ठाणे, दादर और पुणेके कुछ साधकोंकी वास्तुमें भी करवाया ।' (योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीकी 'आकाशवाणी'द्वारा २१.७.२००२ को प्रसारित भेंटवार्ता से)

सद्गुरु (श्रीमती) अंजली गाडगीळजी के नामके आगे विशिष्ट आध्यात्मिक उपाधि लगानेका कारण

नाडीपट्टिका-वाचनद्वारा (नाडीभविष्यद्वारा) सप्तर्षि सनातनका मार्गदर्शन करते हैं । १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) अंजली गाडगीळजीको 'श्रीचित्शक्ति (श्रीमती) अंजली गाडगीळजी' सम्बोधित किया जा रहा है । इनके नामके सम्बोधनके विषयमें परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीने कहा, ''श्रीचित्शक्ति' भगवानके वैश्विक ज्ञानसे सम्बन्धित है ।''

संस्कृत भाषानुरूप हिन्दीके प्रयोग हेतु सनातनका समर्थन !

हिन्दीमें उर्दूकी भांति कुछ शब्दोंके नीचे बिन्दु (नुक्ता) लगाते हैं, उदा. हज़ार, जोड़, गाढ़ । संस्कृत देवभाषा है । सनातन संस्था उसे आदर्श मानकर, ग्रन्थोंमें शब्दोंके नीचे बिन्दु नहीं लगाती तथा कारकचिन्हको धातुसे जोडती है । संस्कृत समान हिन्दीका प्रयोग करना अर्थात 'चैतन्यकी ओर अग्रसर होना' । प्रत्येक व्यक्ति इसका आचरण कर 'स्वभाषा' रक्षार्थ अर्थात धर्मरक्षाके कार्यमें सहभागी होकर अपना धर्मकर्तव्य निभाए ! – **(परात्पर गुरु) डॉ. आठवले**

एकमेवाद्वितीय योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजीके चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणाम !

योगतज्ञ दादाजी : कलियुगके महान ऋषि !

'प्राचीन कालमें ऋषि-मुनियों द्वारा की गई कठोर तपस्या, उनकी त्रिकालदर्शिता, सर्वज्ञता, लीलासामर्थ्य, वैराग्यशीलता आदि के सन्दर्भमें हमें ज्ञात होता है । कलियुगमें ऐसा कोई हो सकता है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती; परन्तु कलियुगमें हुए योगतज्ञ प.पू. दादाजी वैशंपायनजी ऐसी अद्वितीय महान विभूति हैं !

योगतज्ञ दादाजीने अत्यन्त कष्टप्रद साधना की, जिससे उन्हें अनेक सिद्धियां प्राप्त थीं । बडे-बडे योगीजन सिद्धियोंके मोहमें फंस जाते हैं; परन्तु योगतज्ञ दादाजीने कभी इन सिद्धियोंका दुरुपयोग नहीं किया । 'लक्ष्मीसिद्धि'के कारण वे अपार सम्पदाके स्वामी हो सकते थे; परन्तु वे जीवनभर अत्यन्त सादगीसे रहे । 'भविष्यकथनसिद्धि'के कारण उन्होंने अनेक भविष्यवाणियां पहले ही कर रखी थीं तथा आगे वे सटीक सत्य सिद्ध हुईं । इसलिए प्रसिद्धिके उच्च आसनपर विराजमान होते हुए भी उन्होंने सदैव संन्यासीकी भांति जीवन व्यतीत किया । 'दीन-दुखियोंकी समस्याएं दूर कर उन्हें अध्यात्मके मार्गपर लाया जा सके' इसीके लिए उन्होंने सिद्धियोंका उपयोग किया ! और तो और 'निःस्वार्थ भावसे जनकल्याणके लिए समर्पित जीवन !', ऐसी ही उनके जीवनकी व्याख्या की जा सकती है । उनके तपस्वी व्यक्तित्व और लोकोत्तर कार्य के अनेक अंग प्रस्तुत ग्रन्थमें उजागर किए गए हैं ।

सनातनपर निरन्तर कृपाछत्र बनाए रखनेवाले योगतज्ञ दादाजी !

मेरे गुरुके देहत्यागके कुछ समय पश्चात मेरी योगतज्ञ दादाजीसे भेंट हुई तथा सदाके लिए मेरे उनके साथ आत्मीय सम्बन्ध बन गए ! इस प्रकार ईश्वरने मुझे गुरुकी न्यूनता (कमी) अनुभव नहीं होने दी ।

गत १५ वर्षोंसे मेरा महामृत्युयोग टालने, सनातनके साधकोंपर होनेवाले अनिष्ट शक्तियोंके आक्रमण दूर करने, सर्व संकटोंसे सनातनकी रक्षा करने तथा ईश्वरीय राज्यकी (हिन्दू राष्ट्रकी) स्थापनामें आनेवाली बाधाएं दूर होनेके लिए योगतज्ञ दादाजीने अन्तिम श्वासतक अनुष्ठान, जप-तप इत्यादि किए ।

वर्ष २०१३ में योगतज्ञ दादाजीने मुझसे कहा, ''अब दैवी शक्तियोंने मुझे मेरी इहलोककी यात्रा समाप्त करनेकी आज्ञा दी है । इसलिए अब मुझे देहत्याग करना पडेगा ।'' तब मैंने योगतज्ञ दादाजीसे कहा, ''आपके पश्चात हमारी रक्षा कौन करेगा ? हम किससे उपाय पूछेंगे ?'' तब उन्होंने कुछ विचार कर कहा, ''वर्तमानमें पृथ्वीपर वैसा दूसरा कोई नहीं है । दैवी शक्तियोंसे कहकर मैं आपके लिए अपनी आयु बढा लेता हूं ।'' इस एक घटनासे दादाजीकी सनातनके प्रति अपार प्रीति और उनका अध्यात्म सम्बन्धी असामान्य अधिकार ध्यानमें आता है ।

योगतज्ञ दादाजी जैसे उच्च कोटिके सन्तोंका कार्य निर्गुण स्थितिमें भी चलता रहता है । इसलिए 'यद्यपि आज योगतज्ञ दादाजी स्थूलरूपसे नहीं है, तथापि निर्गुण रूपसे वे सदैव हमारे साथ हैं', ऐसी हमारी दृढ श्रद्धा है ।

कृतज्ञता और प्रार्थना !

संक्षेपमें, योगतज्ञ दादाजीके कारण ही मैं और सनातन संस्था अभी तक जीवित और कार्यरत हैं । क्या उनका यह ऋण हम कभी चुका पाएंगे ? कदापि सम्भव नहीं ! इसलिए अंतःकरणमें उनके प्रति यही शब्द उभरते

हैं, 'कृतज्ञता...कृतज्ञता...कृतज्ञता !' मैं योगतज्ञ दादाजीके चरणोंमें इतनी ही प्रार्थना कर सकता हूं, 'आपकी कृपाका छत्र हमपर सदैव बना रहे ।'

'प्रस्तुत ग्रन्थके माध्यमसे योगतज्ञ दादाजीकी अलौकिक कीर्तिकी सुगन्ध सर्वत्र फैलती रहे और सभीके अंतःकरणमें उनके प्रति दृढ श्रद्धा और भक्ति निर्माण हो', ऐसी ईश्वरके चरणोंमें प्रार्थना भी करता हूं ।

योगतज्ञ दादाजीके चरणोंमें ग्रन्थ अर्पित !

प्रस्तुत ग्रन्थ योगतज्ञ दादाजीकी कृपा और उनके अव्यक्त संकल्पसे ही प्रकाशित हो रहा है । अतः यह ग्रन्थ उनके चरणोंमें अर्पित !'

– डॉ. जयंत बाळाजी आठवले (१६.३.२०२१)

योगतज्ञ दादाजीद्वारा अल्प अवधिमें तैयार किया गया उत्तम शिष्य श्री. अतुल पवार !

'योगतज्ञ दादाजीने मुझसे उनकी सेवाके लिए एक साधकको उनके पास भेजनेके लिए कहा । तब ऐसा कौन है, जो उनकी सेवा अच्छेसे कर पाएगा ?, यह विचार मेरे मनमें आया और तत्काल श्री. अतुल पवारका नाम सूझा; इसलिए मैंने अतुलको उनके पास भेजा । उसने योगतज्ञ दादाजीकी इतनी उत्कृष्ट सेवा की, कि वे सदैव उसकी प्रशंसा करते थे । केवल योगतज्ञ दादाजीकी सीखके कारण ही वह इतनी उत्कृष्ट सेवा कर पाया । एक उत्तम शिष्य तैयार करनेके लिए मैं योगतज्ञ दादाजीके चरणोंमें कोटि-कोटि कृतज्ञ हूं ।' **– (परात्पर गुरु) डॉ. आठवले**

प्रार्थनाका महत्त्व व उदाहरण समझने हेतु सनातनका लघुग्रंथ **'प्रार्थना'**